विश्व सेवाधारी, तपस्वी कुमार बनने के लिए

अव्यक्त बापदादा की अनमोल शिक्षायें

(विशेष युवाओं के प्रति)

(1969-95)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय

पाण्डव भवन, आबू पर्वत (राज.)

विश्व सेवाधारी, तपस्वी कुमार बनने के लिए

अव्यक्त बापदादा की

अनमोल शिक्षायें

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय

पाण्डव भवन, आबू पर्वत (राज.)

प्रकाशक :

साहित्य विभाग,
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय
पाण्डव भवन, आबू पर्वत - ३०७५०२ (राजस्थान)

मुद्रक :

ओम् शान्ति प्रेस, शान्तिवन, तलहटी,
आबू रोड - ३०७०२६ (राजस्थान)

Copyright :
Brahma Kumaris Ishwariya Vishwavidyalaya
Mount Abu, Rajasthan, India

No part of this book may be printed without the permission of the publisher.

दो शब्द

जनवरी, 1969 से अप्रैल 1995, तक की सभी अव्यक्त वाणियों में अव्यक्त बापदादा द्वारा कुमारों के प्रति जो विशेष अनमोल रत्न प्राप्त हुए हैं उनका यहाँ संग्रह किया गया है। कुमार जीवन डबल शक्तिशाली जीवन है, विश्व परिवर्तन के कार्य में कुमारों का विशेष योगदान है। पवित्र कुमार अपने श्रेष्ठ जीवन के परिवर्तन द्वारा अपना प्रभाव विश्व की आत्माओं पर डाल सकते हैं। इस पुस्तक में युवा शक्ति का महत्व, युवकों के प्रति बापदादा की शुभ आशायें, उनके प्रति अनमोल शिक्षायें, श्रेष्ठ जीवन बनाने के लिए प्रेरणायें जो समय प्रति समय अव्यक्त मुरलियों में प्राप्त हुई हैं उन्हें भिन्न-भिन्न पाइंट्स के रूप में यहाँ प्रकाशित किया गया है। जिन्हें पढ़ने से युवक अपने पथ पर सदा आगे बढ़ते हुए, स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन की सेवा में विशेष अपना योगदान दे सकते हैं।

बापदादा सभी कुमारों से यही शुभ आशायें रखते हैं कि हर एक स्वयं में रूहानियत को धारण करें। सदा स्वतन्त्र बन उड़ते पंछी की तरह उड़ते हुए, इस कलियुगी पर्वत को परिवर्तन कर गोल्डन सतयुगी दुनिया स्थापन करने में, अपने सहयोग की अंगुली प्रदान करें। आज के इस तमोगुणी वातावरण के बीच में रहते हुए, अपनी दृष्टि-वृत्ति को सम्पूर्ण पावन बनाकर सच्चे तपस्वी बनें।

इन्हीं शुभ प्रेरणाओं को यहाँ संग्रहित किया गया है जिन्हें बार-बार पढ़कर स्वयं में समाने से अपने जीवन को सदाकाल के लिए श्रेष्ठ चरित्रवान बनाने की प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

यह शिक्षायें सिर्फ युवक भाईयों प्रति ही नहीं अपितु सर्व ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मणों के प्रति भी हैं, जिसे पढ़ने से सर्वगुणों से सम्पन्न जीवन बनाने में मदद मिलेगी।

धन्यवाद,

प्रकाशमणि

मधुबन,

जुलाई, 1995

कुमार जीवन की विशेषतायें तथा कुमारों के प्रति बापदादा की शुभ आशायें

1- कुमार जीवन शक्तिशाली जीवन गाया हुआ है लेकिन ब्रह्माकुमार डबल शक्तिशाली कुमार हैं। एक तो शारीरिक शक्ति दूसरी आत्मिक शक्ति। साधारण कुमार शारीरिक शक्ति व विनाशी आक्यूपेशन की शक्ति वाले हैं। आत्मा पवित्रता की शक्ति से जो चाहे कर सकती है।

2- ब्रह्माकुमार का अर्थ ही है पवित्र कुमार। ब्रह्मा बाप ने दिव्य जन्म देते ''पवित्र भव'' यही वरदान दिया। ब्रह्मा बाप ने जन्मते ही बड़ी माँ के रूप में पवित्रता के प्यार से पालना की। माँ के रूप से सदा पवित्र बनो, योगी बनो, श्रेष्ठ बनो, बाप समान बनो, विशेष आत्मा बनो, सर्वगुण मूर्त बनो, सुख-शान्ति स्वरूप बनो–हर रोज यह लोरी दी। बाप के याद की गोदी में पालन किया, सदा खुशियों के झूले में झुलाया। ऐसे मात-पिता के श्रेष्ठ बच्चे ब्रह्माकुमार हैं।

3- ब्रह्माकुमार अर्थात् सदा प्युरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी में रहने वाले। आपकी यह प्युरिटी की पर्सनैलिटी विश्व की आत्माओं को प्युरिटी की तरफ आकर्षित करेगी और प्युरिटी की रॉयल्टी धर्मराजपुरी की रॉयल्टी (दण्ड) देने से छुड़ायेगी। इस रॉयल्टी के आधार पर भविष्य रॉयल फैमली में आ सकेंगे।

4- कुमार जीवन लकी जीवन है क्योंकि उल्टी सीढ़ी चढ़ने से बच गये। सीढ़ी चढ़ने वाले अभी उतर रहे हैं इसलिए अपने को प्रवृत्ति में रहते भी कुमार-कुमारी कहलाते हैं। आप तो हो ही कुमार, तो सदा अपने इस श्रेष्ठ भाग्य को स्मृति में रखो। कुमार जीवन अर्थात् बंधनों से बचने का जीवन। नहीं तो देखो कितने बंधनों में होते। बंधनों में खिंचने से बच गये। तो मन से भी स्वतन्त्र, सम्बन्ध से भी स्वतन्त्र, कुमार जीवन अर्थात् सदा उड़ते पंछी, बंधन में फँसे हुए नहीं।

5- कुमार डबल लाइट हैं, संस्कार स्वभाव का भी बोझ नहीं। व्यर्थ संकल्पों का भी बोझ नहीं। इसको कहा जाता है हल्का। जितना हल्के होंगे उतना सहज उड़ती कला का अनुभव करेंगे। ज़रा भी मेहनत करनी पड़ती है तो जरूर कोई बोझ है। कुमार अर्थात् हर बात में बाबा-बाबा कहते उड़ने वाले। बाबा को ही अविनाशी आधार बनाने वाले।

6- कुमार अर्थात् सदा आज्ञाकारी, वफादार। हर कदम में फालो फादर करने वाले। जो बाप के गुण वह बच्चों के, जो बाप का कर्तव्य वह बच्चों को। जो बाप के संस्कार वह बच्चों के। इसको कहा जाता है फालो फादर। जो बाप ने किया है वही रिपीट करना है, कॉपी करना है। इस कॉपी करने से फुल मार्क्स मिल जायेंगी। वहाँ कापी करने से मार्क्स कट जाते हैं और यहाँ फुल मार्क्स मिल जाते हैं।

7- कुमार जीवन श्रेष्ठ जीवन है, कुमार जीवन में बाप के बन गये, ऐसी श्रेष्ठ तकदीर देख सदा हर्षित रहो और औरों को भी हर्षित रहने की विधि सुनाते रहो। सबसे निर्बन्धन कुमार हैं। कुमार जो चाहें वह अपना भाग्य बना सकते हैं सिर्फ हिम्मत वाले कुमार बनो। कुमार जीवन में चाहे अपने को श्रेष्ठ बनाओ चाहे अपने को नीचे गिराओ, यह कुमार जीवन ही ऊंचा वा नीचा होने वाला है। ऐसे जीवन में आप बाप के बन गये। विनाशी जीवन के साथी के कर्मबन्धन में बंधने के बजाए सच्चा जीवन का साथी ले लिया तो कितने भाग्यवान हो।

8- इस अलौकिक कुमार जीवन में अकेले होते भी सदा कम्बाइन्ड हो और ऐसे साथी के साथ कम्बाइन्ड हो जिसका टिकेट भी नहीं लेना पड़ता। अगर शरीर से साथी को लाते तो टिकेट खर्च करते और उसका सामान भी उठाना पड़ता, कमा करके भी रोज़ खिलाना पड़ता। यह साथी तो खाता भी नहीं, सिर्फ वासना लेता है। रोटी कम नहीं हो जाती और ही शक्ति भर जाती है। तो बिना खर्चा, बिना मेहनत के अविनाशी साथ और सहयोगी मिलता है। कोई भी मुश्किल कार्य आये तो याद करो और सहयोग मिला। तो आप कुमार कम्बाइन्ड तो बने लेकिन इस कम्बाइन्ड में बेफिकर बादशाह बन गये। कोई झंझट नहीं।

आज बच्चा बीमार हुआ, आज बच्चा स्कूल नहीं गया–ऐसा कोई बोझ नहीं। एक के बंधन में बंधने से अनेक बंधनों से छूट गये। खाओ, पिओ, मौज करो और क्या काम। अपने हाथ से बनाया और खाया, जो चाहे वह खाओ। स्वतन्त्र हो, तो कितने श्रेष्ठ हो।

9- कुमार अर्थात् निरन्तर योगी। क्योंकि कुमारों का संसार ही एक बाप है। जब बाप ही संसार है तो संसार के सिवाए बुद्धि और कहाँ जायेगी। जब एक ही हो गया तो एक की ही याद रहेगी ना। और एक को याद करना बहुत सहज है। अनेकों से छूट गये, एक में ही सब समाये हुए हैं। नहीं तो गृहस्थी जीवन में बुद्धि कितनों में भटकती है। तो अपने को ऐसा श्रेष्ठ भाग्यवान समझ औरों के भी भाग्य की रेखा खींचने वाले बनो। बापदादा को कुमार और कुमारी जीवन प्यारा लगता है। गृहस्थ जीवन है बंधन वाला और कुमार जीवन है बन्धनमुक्त।

10- कुमार अर्थात् डबल कार्य करने वाले। कुमारों के पास शारीरिक शक्ति के साथ-साथ संकल्प शक्ति भी बहुत है। इसलिए स्थापना के कार्य में बहुत सहयोगी बन सकते हैं। कुमारों की बुद्धि में एक ही बात सदा रहती है कि मेरा बाबा और मेरी सेवा और कोई बात नहीं। जिनकी बुद्धि में सदा बाबा और सेवा है वह सहज ही मायाजीत भी बन सकते हैं।

11- कुमार अर्थात् कमज़ोरी को सदा के लिए तलाक देने वाले। आधा कल्प के लिए कमज़ोरी को तलाक दे दी ना। जो सदा समर्थ आत्मायें हैं उनके आगे कमज़ोरी आ नहीं सकती। ऐसी समर्थ आत्मायें बाप को भी प्रिय हैं तो परिवार को भी प्रिय हैं।

12- कुमार बुद्धि सालिम है, अधरकुमार बनने से बुद्धि बंट जाती है। कुमारों को एक ही काम है, अपना ही जीवन है। उन्हों को तो कितनी ज़िम्मेवारियाँ हो जाती हैं। आप ज़िम्मेवारियों से स्वतन्त्र हो, स्वतन्त्र होने कारण जितना आगे बढ़ना चाहो बढ़ सकते हो। बोझ वाला धीरे-धीरे चलेगा। स्वतन्त्र, हल्का होने कारण तेज़ चलेगा। तो तेज़ रफ्तार वाले हो। तीव्र रफ्तार अर्थात्

आज जो है कल उससे आगे, परसों उससे आगे। ऐसे नहीं 6 मास बीत जाएं, जैसे हैं वैसे चल रहे हैं।

13- बापदादा को कुमारों पर नाज़ हैं कि कुमार अपने जीवन को कितना श्रेष्ठ बना रहे हैं। सदा इसी स्मृति में रहो कि हमारे जैसा भाग्यवान कोई नहीं। कुमारियाँ स्वतन्त्र होकर सेवा नहीं कर सकती, कुमार तो कहीं भी अकेले जाकर सेवा कर सकते हैं। कुमारों को कोई बंधन नहीं, कुमारियाँ तो फिर भी आजकल की दुनिया के हिसाब से बंधन में है। कुमार आलराउन्ड सेवा कर सकते हैं।

14- कुमार संकल्पों के बोझ से और सम्बन्ध, सम्पर्क के बोझ से हल्के होने के कारण डबल लाइट हैं, लक्की हैं। क्योंकि नालेजफुल कभी भी व्यर्थ की तरफ जा नहीं सकते। उनके आगे व्यर्थ संकल्प भी आ नहीं सकता। संकल्प और कर्म में शक्तिवान होने के कारण मास्टर सर्वशक्तिमान् हैं।

15- कुमार जीवन में ब्रह्मावुमार बनना अर्थात् रूहानी शक्तिशाली बन जाना। अपना वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ बना लेना। आपका ऐसा श्रेष्ठ जीवन है जो सदा के लिए दु:ख से, धोखे से, भटकने से किनारा हो गया। नहीं तो जिस्मानी शक्ति वाले भटकते रहते हैं। लड़ना-झगड़ना, दु:ख देना, धोखा देना – यही करते हैं। तो आप कितनी बातों से बच गये। जैसे स्वयं बचे हो ऐसे औरों को भी बचाओ।

16- कुमार अर्थात् सदा अचल अडोल। कैसी भी परिस्थिति आ जाए लेकिन डगमग होने वाले नहीं। क्योंकि आपका साथी स्वयं बाप है। जहाँ बाप है वहाँ सदा ही अचल अडोल होंगे। जहाँ सर्वशक्तिमान् होगा वहाँ सर्वशक्तियाँ होंगी। सर्वशक्तियों के आगे माया कुछ नहीं कर सकती। इसलिए कुमार जीवन अर्थात् सदा एकरस स्थिति वाले, हलचल में आने वाले नही। जो हलचल में आता है वह अविनशी राज्य भाग्य भी नहीं पा सकता है। थोड़ा-सा सुख मिल जायेगा लेकिन सदा का नहीं।

17- कुमार जीवन श्रेष्ठ है क्योंकि पवित्र जीवन है और जहाँ पवित्रता है वहाँ महानता है। कुमार जो संकल्प करें वही कर्म कर सकते हैं। स्वयं भी पवित्र रह औरों को भी पवित्र रहने का महत्व बता सकते हैं। ऐसे सेवा के निमित्त बन सकते हैं। जो दुनिया वाले असम्भव समझते हैं वह आप कुमार चैलेन्ज करते हो तो हमारे जैसा पावन कोई हो नहीं सकता। क्योंकि बनाने वाला सर्वशक्तिमान है। दुनिया वाले कितने भी प्रयत्न करते हैं लेकिन आप जैसे पावन बन नहीं सकते। आप सहज ही पावन बन गये। कुमारों की परिभाषा ही है चैलेंज करने वाले, परिवर्तन कर दिखाने वाले, असम्भव को सम्भव करने वाले, दुनिया वाले अपने साथियों को संगदोष में ले आते हैं और आप बाप के संग में ले आते हो। उन्हें अपना संग नहीं लगाते, बाप के संग में ले आते हो। बाप समान बनाते हो।

18- कुमार जीवन में रहते अगर लौकिक ज़िम्मेवारी डायरेक्शन प्रमाण निभाते तो वह भी एक खेल खेलते। छोटी-छोटी बातों में थकते नहीं। कुमार माना ही अथक। जो लौकिक ज़िम्मेवारी को बंधन समझते हैं वह तंग होते हैं फिर प्रश्न करते क्या करें, कैसे करें? डायरेक्शन प्रमाण करो तो जिम्मेवार बाप है, आप निमित्त हो।

19- कुमारियों के लिए कहते हैं 100 ब्राह्मणों से उतम एक कन्या लेकिन कुमार 6 शीतलाओं के बीच एक दिखाते हैं। तो आप कुमार 700 ब्राह्मणों से उत्तम हो।

20- कुमार-कुमारियाँ–अपने इस जीवन में सब कुछ देखते हुए, जानते हुए फिर भी दृढ़ संकल्प कर दृढ़ त्यागी बनते हैं तो उस त्याग का भाग्य मिलता है। बापदादा द्वारा उन्हें एकस्ट्रा मार्क्स मिलती हैं। कुमार अर्थात जो चाहे सेकेण्ड में सोचा और किया। सोचना और करना साथ-साथ हो।

21- कुमार अर्थात् सदा बाप के साथी। कुमारों का चित्र सदा बाप के साथ रहने का ही दिखाया है, तुम्ही से खेलूँ, तुम्हीं से खाऊं। यह चित्र सखे रूप का है। सखा अर्थात् साथ। तो कुमारों को ग्वालबाल के रुप में, सखा के रूप में

दिखाया है। ऐसे बाप के साथी समझकर चलते रहो।

22- चाहे कुमार हैं, चाहे अधर कुमार हैं लेकिन अभी ब्रह्माकुमार हैं। कुमारी जीवन या कुमार जीवन बहुत श्रेष्ठ जीवन है लेकिन ब्रह्माकुमार हैं तो। दुनिया वाले तो सोचते रह जाते हैं और आप सदा सम्पन्न बन गये। वो सोचते रहते हैं पता नहीं क्या होगा, कब होगा और आप कहते हो जो होना था वो हो रहा है, जो पाना था वो पा लिया है।

कुमारों के प्रति अव्यक्त बापदादा की मधुर शिक्षायें

1- कुमार जीवन में सदा लक्ष्य रहे कि हमें बाप समान डबल लाइट बनना है। सी फादर और फालो फादर करना है। औरों को नहीं देखना है। स्वयं को सदा बाप की छत्रछाया के अन्दर अनुभव करना है। इससे मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। स्वत: ही सर्व शक्तियों की किरणें मायाजीत बना देंगी।

2- कुमार, सदा हिम्मतवान हैं, जो चाहें वह कर सकते हैं। इसलिए सदा स्मृति रहे कि हम महावीर हैं, हमें एक बाप के सिवाए दूसरा कोई अपनी तरफ आकर्षित नहीं कर सकता। माया कई रूपों से आपको अपना बनाने का प्रयत्न करेगी लेकिन निश्चयबुद्धि रहने से विजयी बनेंगे। घबराना नहीं। सदा स्मृति में रखना कि वाह मेरी श्रेष्ठ तकदीर! हमारे जैसा कोई हो नहीं सकता। जहाँ यह ईश्वरीय नशा होगा वहाँ माया से परे रहेंगे। सेवा में सदा बिजी रहो तो सहजयोगी बन जायेंगे। याद सहित सेवा हो तो सेफ्टी है, याद नहीं तो सेफ्टी नहीं।

3- कुमारों को माया अपना बनाने की कोशिश बहुत करती है। माया को कुमार बहुत पसन्द आते हैं। वह समझती है मेरे बन जायें लेकिन आप सब तो बहादुर हो ना! माया के मुरीद नहीं बनना, माया को चैलेन्ज करने वाले बनना। आधाकल्प माया के मुरीद बनकर सब कुछ गँवा दिया। अभी प्रभू के बन गये। प्रभू का बनना अर्थात् स्वर्ग का अधिकार पाना। तो सभी कुमार विजयी कुमार बनो। कुमारों से माया का एकस्ट्रा प्यार है इसलिए चारों ओर से कोशिश करती है कि मेरे बन जायें। लेकिन आप सबने संकल्प कर लिया, जब बाप के हो गये तो निस्फुरने (निश्चिंत) हो गये। सदा निर्विघ्न भव, उड़ती कला भव।

4- कुमार अर्थात् सदा समर्थ, जहाँ समर्थी है वहाँ प्राप्ति है। नालेजफुल होने के कारण माया के भिन्न-भिन्न रुपों को जानने वाले। कुमार, सदा एक बात पक्की करो कि कुमार जीवन अर्थात् मुक्त जीवन! जो जीवनमुक्त है वह

संगमयुग की प्राप्ति युक्त होगा। कुमारों को सदा इसी खुशी में नाचना है कि वाह कुमार जीवन, वाह भाग्य, वाह ड्रामा, वाह बाबा....यही गीत गाते रहो। खुशी में रहो तो कमज़ोरी नहीं आ सकती। एक बाप ही सर्व सम्बन्धों से मेरा है – इसी स्मृति में रहने से समर्थी आती रहेगी। सेवा और याद दोनों से शक्ति भरते रहो। कुमार जीवन हल्की जीवन है इस जीवन में अपनी तकदीर बनाना–यह सबसे बड़ा भाग्य है।

5- कुमार जीवन में जो भी संकल्प करो, पहले चेक करो कि यह बाप-सामन है! अगर नहीं है तो चेंज कर दो, अगर है तो प्रैक्टिकल में लाओ। जो बाप ने किया वह आप करो तो फालो फादर करने से मास्टर सर्वशक्तिमान् की स्थिति में स्थित हो जायेंगे। सर्व शक्तियाँ और सर्वगुणों पर अधिकार हो जायेगा। इसमें अलबेले बने तो माया अधिकार छीन लगी। माया को सबसे अच्छे ग्राहक कुमार लगते हैं। इसलिए वह अपना चांस लेती है। आधाकल्प उसके साथी रहे हो तो वह अपने साथियों को कैसे छोड़ेगी। तो माया का काम है आना, आपका काम है जीत प्राप्त करना। घबराओ नहीं।

6- कुमार जीवन स्वतन्त्र जीवन है – ऐसे सदा स्वतन्त्र रहना, कभी स्वप्न में भी यह ख्याल न आये कि चलो किसी कुमारी का कल्याण कर दें, यह कल्याण नहीं है, अकल्याण है। क्योंकि एक बंधन बंधा तो अनेक बंधन शुरु हो जायेंगे। उससे मदद नहीं मिलेगी, बोझ हो जायेगा। देखने में भले मदद है लेकिन है अनेक तनों का बोझ, अगर किसी के साथ बंधने का संकल्प किया तो ऐसा बोझ अनुभव करेंगे जो उठना ही मुश्किल हो जायेगा। वह तो बेचारे अनजान से बंध गये आप जान बूझकर बंधेंगे तो और ही पश्चाताप का बोझ होगा। तो ऐसे कच्चे नहीं बनना। जो कच्चे हैं वह न यहाँ के रहते न वहाँ के, उनकी सद्गति हो नहीं सकती। सद्गति माना श्रेष्ठ गति। तो सदा पक्के रहना इसी से वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ बनेगा।

7- कुमार सदा समर्थ होने के कारण जो भी संकल्प करेंगे, बोल बोलेंगे, कर्म करेंगे वह समर्थ होगा। समर्थ का अर्थ ही है व्यर्थ को समाप्त करने वाले।

व्यर्थ का खाता समाप्त कर समर्थ का खाता सदा जमा करने वाले। तो कभी भी व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल न हों। समय भी व्यर्थ न जाये। क्योंकि संगम पर एक सेकेण्ड भी कितना बड़ा है। सेकेण्ड नहीं है लेकिन एक सेकेण्ड एक जन्म के बराबर है। ऐसे महत्व को जानकर समर्थ आत्मा रहना। सदा यह स्मृति रहे कि हम समर्थ बाप के बच्चे हैं, समर्थ आत्मायें हैं, समर्थ कार्य के निमित्त हैं। इससे सदा उड़ती कला का अनुभव करते रहेंगे। कमज़ोर उड़ नहीं सकते। चढ़ते हैं तो सांस फूल जाता है। थक भी जाते हैं और उड़ती कला वाले सेकेण्ड में मंजिल पर पहुँच जाते हैं।

8- कुमार जीव में मेहनत से छूटने का साधन है – बाप का हर सेकेण्ड, हर संकल्प में साथ हो। इस साथ में सफलता हुई पड़ी है। जो बाप की आज्ञा है उस आज्ञा के प्रमाण कदम हो। बाप के कदम के पीछे कदम हो। यहाँ कदम रखें या न रखें, राइट है या रांग है, यह सोचने की भी जरूरत नहीं। श्रीमत ही कदम है। श्रीमत के कदम पर कदम रखने से मेहनत से छूट जायेंगे। सर्व सफलता अधिकार के रूप में होगी। छोटे कुमार भी बहुत सेवा कर सकते हैं, कभी मस्ती नहीं करना। आपकी चलन, बोल-चाल ऐसा हो जो सब पूछें कि यह किस स्कूल में पढ़ने वाले हैं।

9- सभी कुमार सदा रूहानियत में रहते हो? रोब में तो नहीं आते? यूथ को रोब जल्दी आ जाता है। क्योंकि वह समझते हैं कि हम सब कुछ जानते हैं, सब कुछ कर सकते हैं। जवानी का जोश रहता है। लेकिन रूहानी यूथ अर्थात् सदा रूहाब में रहने वाले, सदा नम्रचित। क्योंकि जितना नम्र होंगे, उतना निर्माण करेंगे। जहाँ निर्मान होंगे, वहाँ रोब नहीं होगा, रूहानियत होगी। जैसे बाप कितना नम्रचित बनकर आते हैं, ऐसे फालो फादर। अगर जरा भी सेवा में रोब आया तो वह सेवा समाप्त हो जायेगी।

10- कुमार अर्थात् सदा तीव्रगति से आगे बढ़ने वाले। रूकना-चलना, रूकना-चलना, ऐसे नहीं। कैसी भी परिस्थिति आये लेकिन स्वयं को सदा शक्तिशाली आत्मा समझ आगे बढ़ते चलो। परिस्थिति व वायुमण्डल के प्रभाव

में नहीं आना लेकिन अपना श्रेष्ठ प्रभाव दूसरों पर डालना। श्रेष्ठ प्रभाव है ही रूहानी प्रभाव। पेपर आये तो हिलना नहीं। सदा हिम्मतवान रहना। जहाँ हिम्मत है वहाँ बाप की मदद है ही। हिम्मते बच्चे मददे बाप। तो हर कार्य में स्वयं को आगे रख औरों को भी शक्तिशाली बनाते चलो।

11- कुमार, ब्रह्मावुमार तो बन ही गये लेकिन अब शक्तिशाली बन विजयी बनो। क्योंकि शक्तिशाली कुमार सदा नालेजफुल और पावरफुल होंगे। नालेजफुल अर्थात् रचता और रचना के साथ-साथ माया के भिन्न-भिन्न रूपों को भी जानने वाले। ऐसे नालेजफुल ही पावरफुल, सदा विजयी हैं। नालेज जीवन में धारण करना अर्थात् नालेज को शस्त्र बना देना। शस्त्रधारी ही शक्तिशाली होते हैं। जैसे मिलिट्री वालों के पास जब शस्त्र होते हैं तो निर्भय हैं। ऐसे नालेजफुल अर्थात् पावरफुल। माया की पूरी नालेज रखने वाले। क्या होगा, कैसे होगा, पता नहीं पड़ा माया कैसे आ गई, इसे नालेजफुल नहीं कहेंगे। नालेजफुल आत्मा पहले से ही जानती है। अगर आ जाए फिर उसे भगाओ तो टाइम भी वेस्ट और कमज़ोरी की आदत पड़ जायेगी। माया बार-बार आये और वार करती रहे तो हार खाने के आदी हो जायेंगे। और बार-बार हार खाने से कमज़ोर हो जायेंगे। इसलिए शक्तिशाली बनो। युद्ध में अपना समय नहीं गँवाओ।

12- कुमार सदा अपने आपको कम्बाइन्ड समझो, अकेला नहीं, युगल साथ है। सदा कम्बाइन्ड रहेंगे। तो माया आ नहीं सकेगी। क्योंकि कुमार जैसे बाप को बहुत प्रिय हैं ऐसे माया को भी प्रिय हैं, इसलिए माया से सावधान रहना।

13- सदा हर कर्म में कमाल करने वाले कुमार बनो। कोई भी कर्म साधारण न हो, कमाल का हो, जैसे बाप की महिमा करते हो, कमाल गाते हो, ऐसे कुमार अर्थात् हर कर्म में कमाल दिखाने वाले। कभी कैसे, कभी कैसे वाले नहीं। ऐसे नहीं जहाँ कोई खींचे वहाँ खिंच जाओ। लुढ़कने वाले लोटे नहीं, कभी कहाँ लुढ़क जाओ, कभी कहाँ। ऐसे नहीं। कमाल करने वाले बनो। ऐसी कमाल करके दिखाओ जो हरेक चलता फिरता फरिश्ता हो, दूर से ही फरिश्तेपन की झलक अनुभव हो। वाणी से तो सेवा करेंगे ही लेकिन आजकल प्रत्यक्ष प्रूफ चाहते हैं।

प्रत्यक्ष प्रमाण सबसे श्रेष्ठ प्रमाण है। फरिश्तेपन की सेवा करो तो मेहनत कम सफलता ज्यादा होगी। सिर्फ वाणी से सेवा नहीं करो लेकिन मन-वाणी और कर्म तीनों सेवा साथ-साथ हो, इसको कहते हैं कमाल।

14- सदा व्यक्त में रहते अव्यक्त स्थिति में रहने का अभ्यास सहज बनाना। सदा अव्यक्त स्थिति की आदत अपनी तरफ आकर्षित करे तो यह आदत आपको अदालत में जाने से बचायेगी। जब बुरी-बुरी आदतें अपना सकते हो तो क्या यह आदत नहीं डाल सकते! कोई बात दो चार बार प्रैक्टिकल में लाई जाती है तो उसकी प्रैक्टिस हो जाती है। तो यह अभ्यास भी नेचुरल और नेचर बन जाना चाहिए। जब यह स्थिति नेचर बन जायेगी तब नैचुरल कैलेमिटिज़ होंगी। तो अभी पुरानी आदतों से, पुराने संस्कारों से, पुरानी बातों से, पुरानी दुनिया वा देह के सम्बन्धों से पीठ करो। पीठ करने से सहज ही उसके आकर्षण से बच जायेंगे। जैसे सीता रावण को पीठ कर देती है ऐसे पीठ करना सीखो। कुमारों को यह खिलौना (सीता और रावण) सदैव सामने रखना चाहिए। अगर भूल से भी माया की तरफ मुँह किया तो माया की तरफ से जो परीक्षायें आती हैं उनका सामना नहीं कर सकेंगे। अगर उस तरफ मुँह नहीं है तो माया की परिस्थितियों को मुँह दे सकेंगे अर्थात् उनका सामना कर सकेंगे।

15- कुमारों का सदा प्युअर और सतोगुणी रहने का यादगार संनतकुमार के रूप में है। उनकी विशेषता दिखाते हैं कि वे सदा छोटे कुमार ही रहे। कहते हैं उनकी आयु सदैव 5 वर्ष की रहती है। यह प्युरिटी का गायन है। जैसे 5 वर्ष का बच्चा प्युअर रहता है, सम्बन्धों की आकर्षण से दूर रहता है, वैसे ही प्युरिटी का यह यादगार है। कुमार अर्थात् पवित्र अवस्था। भले कितना भी लौकिक परिवार हो लेकिन स्थिति ऐसी हो जैसे छोटा बच्चा प्युअर होता है। ऐसी प्युरिटी हो जिसमें अपवित्रता का संकल्प वा अनुभव ही न हो – ऐसी स्थिति बनाओ।

16- इस दुनिया की बातों से, सम्बन्धों से न्यारे तब बनेंगे जब दैवी परिवार के, बापदादा के प्यारे बनेंगे। वैसे भी कोई सम्बन्धियों से जब न्यारे हो जाते हैं, लौकिक रीति भी अलग हो जाते हैं तो न्यारे होने के बाद ज्यादा प्यारे होते हैं।

और अगर उनके साथ, सम्बन्ध के लगाव में होते तो इतने प्यारे नहीं होते। लेकिन यहाँ ज्ञान सहित न्यारा बनना है। सिर्फ बाहर से न्यारा नहीं बनो। मन का लगाव न हो। जितना-जितना न्यारा बनेंगे उतना प्यारा अवश्य बनेंगे। जब अपनी देह से भी न्यारे होते हो तो वह न्यारेपन की अवस्था अपने आपको भी प्यारी लगती है। तो योगी अर्थात् इस योग्यता को धारण करने वाले बनो।

17- कुमार अर्थात् माया से इनोसेन्ट और ज्ञान में सेन्ट। जैसे सतयुगी आत्मायें जब यहाँ आती हैं तो विकारों की बातों की नालेज से इनोसेंट होती हैं। तो वह संस्कार स्पष्ट स्मृति में आते हैं – कि हमारे ही ऐसे सतुयगी संस्कार थे? यह स्पष्ट स्मृति तब होगी जब आत्मिक स्वरूप की स्मृति स्पष्ट और सदाकाल रहेगी। अभी आत्मिक स्थिति की स्मृति कभी-कभी देह के पर्दे के अन्दर छिप जाती है इसलिए यह स्मृति भी पर्दे के अन्दर दिखाई देती है। आत्मिक स्मृति स्पष्ट और बहुत समय से रहे तो अपना भविष्य वर्सा वा भविष्य के संस्कार स्वरूप में सामने आयेंगे।

18- कुमार अर्थात् सदा सिम्पलिसिटी और प्युरिटी में रहने वाले। जो सिम्पल होता है वही ब्युटीफुल होता है। सिम्पलिसिटी सिर्फ ड्रेस की नहीं, सभी बातों की चाहिए। निरहंकारी बनना अर्थात् सिम्पल बनना। निरक्रोधी अर्थात् सिम्पल, निर्लोभी अर्थात् सिम्पल। यह सिम्पलिसिटी ही प्युरिटी का साधन है। कुमारों को यह स्लोगन सदा यदा रखना है – जो बात कहेंगे वह पहले करेंगे, दिखायेंगे फिर कहेंगे। पहले कहेंगे नहीं, पहले करेंगे, दिखायेंगे फिर कहेंगे।

19- कुमार अर्थात् अथक सेवाधारी। कुमार सेवाधारी तो बहुत अच्छे हो लेकिन सेवा करते समय त्याग और तपस्या को भूल नहीं जाना। तीनों का साथ होने से मेहनत कम और प्राप्ति अधिक होती है। तो आपके त्याग और तपस्या की शक्ति का आकर्षण दूर से प्रत्यक्ष दिखाई दे। जैसे स्थूल अग्नि वा प्रकाश अथवा गर्मी दूर से ही दिखाई देती है वा अनुभव होती है वैसे आपके त्याग तपस्या की झलक दूर से सबको आकर्षित करें।

20- कुमार अर्थात् त्याग, तपस्या और सेवा की महीनता का अनुभव करने वाले। जो भी पुराने संकल्प वा संस्कार हैं वह अंश मात्र भी दिखाई न दें, यह त्याग सीखना है। और मस्तक अर्थात् बुद्धि की स्मृति वा दृष्टि से सिवाए आत्मिक स्वरूप के और कुछ भी दिखाई न दे वा स्मृति में न आये – ऐसे निरन्तर तपस्वी बनना है। जिस भी संस्कार वा स्वभाव वाले चाहे रजोगुणी, चाहे तमोगुणी आत्मा हो, संस्कार वा स्वभाव के वश हो, आप के पुरूषार्थ में परीक्षा के निमित्त बनी हुई हो लेकिन हर आत्मा के प्रति सेवा अर्थात् कल्याण का संकल्प वा भावना उत्पन्न हो, ऐसे सर्व आत्माओं का सेवाधारी अर्थात् कल्याणकारी बनना है।

21- जैसे अभी सभी के सामने ब्रह्माकुमार प्रसिद्ध दिखाई देते हो, दूर से ही समझ जाते हैं कि यह ब्रह्माकुमार हैं, ऐसे अब ब्रह्माकुमार के साथ-साथ तपस्वी कुमार दूर से ही दिखाई पड़ो। वह तब होगा जब मनन और मगन दोनों का अनुभव करेंगे। जैसे स्थूल नशे में रहने वाले के नैन चैन चलन दिखाई देती है कि यह नशे में है। ऐसे ही आपकी चलन और चेहरे से ईश्वरीय नशा और नारायणी नशा दिखाई पड़े। चेहरा ही आपका परिचय दे। अभी धारणा का रूप गुप्त नहीं रखना है। ज्ञान गुप्त है, बाप गुप्त है लेकिन उनके द्वारा जो धारणाओं की प्राप्ति होती है वह गुप्त नहीं हो सकती। धारणाओं को वा प्राप्ति को प्रत्यक्ष रूप में दिखाओ तब प्रत्यक्षता होगी।

22- कुमारों में एक विशेष संस्कार होता है जो ही पुरूषार्थ में विघ्न रूप है, कुमार कुछ न कुछ पुराने संस्कार, अपनी कामनाओं को पूर्ण करने के लिए छिपाकर रख लेते हैं। जैसे जेब खर्च रखा जाता है, ऐसे कुछ न कुछ किनारे रख लेते हैं। लेकिन नहीं। त्याग माना त्याग। जेब खर्च माफिक अपने अन्दर थोड़े बहुत संस्कार भी रहने नहीं देना। अगर जरा भी संस्कार रहा होगा तो वह थोड़ा संस्कार भी हार खिला देगा। इसलिए बिल्कुल जो पुरानी जायदाद है उसे भस्म करके जाना। छिपाकर नहीं रखना।

23- हरेक कुमार लाइट के ताजधारी दिखाई दो। सर्विस के ज़िम्मेवारी का ताज इस ताज के आधार से स्वत: प्राप्त हो जाता है। और जैसे तपस्वी आसन पर बैठते हैं वैसे अपनी एकरस आत्मा की स्थिति के आसन पर विराजमान रहो। इस आसन को नहीं छोड़ो तब सिंहासन मिलेगा। आपकी हर कर्मेन्द्रिय से देह अभिमान का त्याग और आत्म अभिमानी की तपस्या प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे। अब अपना ऐसा तपस्वी रूप प्रत्यक्ष करो जिससे तमोगुण भस्म हो जाए।

24- कुमारों को अब यह स्लोगन सदा याद रखना है – कि सच्चाई और सफाई के आधार पर सृष्टि से विकारों का सफाया करेंगे। जब सृष्टि से करेंगे तो स्वयं से तो पहले से ही हो जायेगा। यह स्लोगन याद रखने वा तपस्वी बनने से सफलतामूर्त बन जायेंगे।

25- कुमारों को अपनी स्मृति वा दृष्टि का परिवर्तन करके फाइनत पेपर में सर्टीफिकेट लेना है। फुल पास होना है। इसके लिए सदा स्मृति में रहे कि हर सेकेण्ड मेरा पेपर हो रहा है और दृष्टि में रहे कि पढ़ाने वाल स्वयं बाप है और पढ़ने वाला में स्टूडेण्ट आत्मा हूँ। भविष्य वा वर्तमान पद की प्राप्ति वा सफलता का आधार सर्टीफिकेट है। सर्टीफिकेट को सदैव सम्भाला जाता है, अलबेलेपन से खो जाता है। तो कभी भी माया के अधीन यानि वश होकर पुरूषार्थ में अलबेलापन नहीं लाना। अलबेलापन होने से रावण सर्टीफिकेट चुरा लेगा फिर स्टेट्स पा नहीं सकेंगे।

26- सभी कुमार सर्विसएबुल तो हो लेकिन सर्विस में एक तो त्रिकालदर्शी-पन का सेन्स भरना है और दूसरा रूहानियत का इसेन्स भरना है। सेन्स और इसेन्स भरने से सर्विसएबुल के साथ सक्सेसफुल हो जायेंगे।

27- कुमारों में यह विशेषता तो है कि जो चाहे वह कर सकते हैं, यह विल-पावर जरूर है लेकिन हर संकल्प और हर सेकेण्ड विल करने की विल-पावर चाहिए। जैसे बच्चे का सब कुछ विल किया जाता है ऐसे आप लोग भी बाप को वारिस बनाते भी हो और बनते भी हो तो जैसे विल-पावर है ऐसे सब

कुछ विल करने की भी विल-पावर चाहिए। जब सब कुछ विल कर देंगे तो स्वत: नष्टोमोहा बन जायेंगे। मोह नष्ट होने से बन्धनमुक्त हो जायेंगे। बंधनमुक्त ही योगयुक्त व जीवनमुक्त बन सकते हैं।

28- कुमारों के पास समय और संकल्प का सबसे बड़ा खजाना है। जैसे स्थूल में जो चाहें वह प्राप्त कर सकते हैं, ऐसे ही इस समय के खजाने से वा संकल्प के खजाने से आप जो प्राप्त करना चाहो वह कर सकते हो। सारी प्राप्ति का आधार संगमयुग का समय और श्रेष्ठ स्मृति अर्थात् याद है। इसको ही विल करना है। आइवेल के लिए थोड़ा बहुत कोने में छिपाकर नहीं रखना हैं, जेब बिल्कुल खाली हो।

29- कुमार सदा लक्की रहना, कभी घबराना नहीं। अपने हाथ से भोजन बनाना बहुत अच्छा है, अपने लिए और बाप के लिए प्यार से बनाओ। पहले बाप को खिलाओ। अपने को अकेला समझते हो तो थक जाते हो। सदा यह समझो कि हम दो हैं, दूसरे के लिए बनाना है तो विधिपूर्वक प्यार से बनाओ तो बहुत अच्छा लगेगा। कुमारों का आपस में ग्रुप होना चाहिए, कभी कोई बीमार पड़े तो एक की डयूटी हो। एक दूसरे की मदद कर सेवा करो। कभी भी पूछ लगाने का संकल्प नहीं करना, नहीं तो बहुत परेशान हो जायेंगे। बाहर से तो पता नहीं चलता लेकिन लगा दिया ता मुश्किल हो जायेगा। अभी तो स्वतन्त्र हो फिर बढ़ जायेगी। इसलिए बाप को अपना कम्पैनियन बनाओ।

30- कुमार ज्वाला रूप बनाकर ज्वाला जगाओ तो जल्दी विनाश हो। ऐसी योग की अग्नि तेज करो जो विनाश ज्वाला तेज हो जाये। कभी किसी बात में क्यों, क्या नहीं करो। क्योंकि मास्टर त्रिकालदर्शी हो। जो तीनों कालों को जानते हैं वह 'क्यों, क्या' नहीं करते। क्यों क्या करने वाले छोटे बच्चे होते हैं, आप सब तो वानप्रस्थ तक पहुँच गये, सदा अपने को वानप्रस्थ स्थिति में देखो तो माया से परे रहेंगे।

31- कुमार बहुत कमाल कर सकते हो क्योंकि रूहानी यूथ हो ना।

आजकल के यूथ गवर्मेन्ट को भी बदलना चाहते हैं तो बदल देते हैं। वह करते हैं डिस्ट्रक्शन, नुकसान और आप करेंगे कनस्ट्रक्शन। आपको विनाश नहीं करना है। आप स्थापना करेंगे तो विनाश आपेही हो जायेगा।

32- कुमारों को आपस में रेस करनी है रीस नहीं। माया कितना भी हिलाने की कोशिश करे लेकिन आप अंगद के माफिक जरा भी नहीं हिलो, नाखून से भी हिला न सके। अगर ज़रा भी कमज़ोरी के संस्कार होंगे तो माया अपना बना देगी। इसलिए पुराने संस्कारों से मरजीवा बनो। कोई भी विघ्न आपके लिए पाठ है, आप उनके अनुभवी बनते-बनते पास विद् आनर हो जायेंगे। कुछ भी होता है उससे पाठ ले लो। क्यों, क्या में न जाओ।

33- कुमारों की मुख्य कम्पलेट है कि हम अकेले हैं, लेकिन बाप को सदा साथी बनाकर साथ रखो तो दिन रात खुशी में नाचते अपना और दूसरों का भविष्य बनायेंगे। अकेला कभी नहीं समझो, अकेला समझेंगे तो माया आयेगी। बाप तो सदा दु:ख सुख का साथी है। वह साथी तो माथा खराब कर देती है। सुख की प्रवृत्ति मिल गई और क्या चाहिए? सदा इसी नशे में रहो कि हमारे जैसा साथी किसी को मिल नहीं सकता। साथी को सदा साथ रखो तो मन सदा मनोरंजन में रहेगा।

34- सभी कुमार शमा पर फिदा होने वाले सम्पूर्ण परवाने हो ना। जो सम्पूर्ण परवाने होंगे वह शमा के स्नेही होंगे, समीप होंगे, उनके सर्व सम्बन्ध एक के साथ होंगे और साहस वाले होंगे। यह चारों बातें सम्पूर्ण धारण करनी हैं, तब कहेंगे सम्पूर्ण समर्पण। ऐसे सम्पूर्ण समर्पण होने वालों का ही गायन है कि गल कर खत्म हो गये। पहाड़ों पर नहीं लेकिन ऊंची स्थिति में गलकर अपने को निचाई से बिल्कुल ऊपर जो अव्यक्त स्थिति है, उसमें गल गये अर्थात् उस अव्यक्त स्थिति में सम्पूर्णता को प्राप्त हुए। यह आपका ही यादगार है।

35- सभी कुमार, स्वयं को सम्पूर्ण समर्पण समझते हो ना! सम्पूर्ण समर्पण अर्थात् तन-मन-धन और सम्बन्ध, समय सब कुछ अर्पण। अगर मन को समर्पण

कर दिया तो मन को बिना श्रीमत के यूज नहीं कर सकते। धन को तो श्रीमत से यूज़ करना सहज है, तन को भी यूज़ करना सहज है लेकिन मन सिवाए श्रीमत के एक भी संकल्प उत्पन्न न करे – इस स्थिति को कहा जाता है सम्पूर्ण। इसलिए ही मनमनाभव का मुख्य मन्त्र है। अगर मन सम्पूर्ण समर्पण है तो तन-धन, समय-सम्बन्ध, सब शीघ्र ही उस तरफ लग जायेगा तो मुख्य बात है मन को समर्पण करना अर्थात् व्यर्थ संकल्प, विकल्पों को समर्पण करना।

36- जैसे आजकल के जमाने में आप लोग जब दफ्तरों में काम करते हो तो कभी-कभी दफ्तर की जो चीज़े हैं वह अपने काम में लगा देते हो, इसी रीति जो आपने समर्पण कर दिया वह आपकी चीज़ नहीं रही, जिसको दिया उनकी हुई, तो उस चीज़ को आप अपने कार्य में यूज नहीं कर सकते। लेकिन संस्कार होने के कारण कभी-कभी श्रीमत के साथ मनमत, देह अभिमान की मत, शूद्रपने की मत यूज़ कर लेते हो। इसलिए ही एकरस स्थिति सदा नहीं रहती है। क्योंकि मन भिन्न-भिन्न रस में है तो स्थिति भी भिन्न हो जाती है।

37- बापदादा ने आप सबको डबल लाइट बनाया है लेकिन कई बार जानबूझकर भी अपने ऊपर बोझ ले लेते हो। 63 जन्मों से विकर्मो का बोझ, लोक मर्यादा का बोझ उठाने के आदि बन गये हो, इसलिए बोझ उतार कर फिर रख लेते हो। तो आज वायदा करो कि जो सोचेंगे, बोलेंगे, जो सुनेंगे, जो करेंगे वह श्रीमत के बिना कुछ नहीं करेंगे। तब कुमार जीवन में पूरा लाभ ले सकेंगे। घबराते तो नहीं हो? गहराई में जाओ तो घबराहट गायब हो जायेगी।

38- कुमारों को सदा विजयी रहने के लिए विशेष परखने की शक्ति धारण करनी है। कोई भी परिस्थिति को, कोई भी संकल्प वाली आत्माओं को, वर्तमान और भविष्य दोनों कालों को परखने की प्रैक्टिस चाहिए। विशेष करके आप लोगों को इस शक्ति की बहुत आवश्यकता है क्योंकि आपके सामने अनेक परिस्थितियाँ आती हैं। उन्हों को सामना करने के लिए यह शक्ति बहुत चाहिए। परखने की शक्ति को तीव्र बनाने के लिए बुद्धि में ज्यादा व्यर्थ के संकल्प न हों। एक की याद में, एक के ही कार्य में और एकरस स्थिति में रहो तो सहज

ही किसी को परख लेंगे। जिनकी बुद्धि में ज्यादा संकल्प होते हैं उनकी बुद्धि दूसरों को परखने के लिए अपने संकल्प मिक्स कर देती है। इसलिए जो जैसा है वैसा परख नहीं सकते।

39- कुमारों की यह कम्पलेंट रहती है कि व्यर्थ संकल्प और विकल्प चलते हैं, यही अव्यक्त स्थिति होने में विघ्न है। इसी कारण बार-बार इस शरीर के आकर्षण में आ जाते हो। इसका मूल कारण है बुद्धि की सफाई नहीं है। बुद्धि की सफाई अर्थात् बुद्धि को जो महामन्त्र मिला है, उसमें ही बुद्धि मग्न रहे। व्यर्थ संकल्प, विकल्प बुद्धि को थकावट में लाते हैं, फिर थकी हुई बुद्धि न परख सकती है न निर्णय कर सकती है। इसलिए विजयी नहीं बन सकते।

40- कहीं भी रहते सदा यह अनुभव करो कि हम इस शरीर में अवतरित हुए हैं ईश्वरीय सेवा के लिए। यह स्मृति में रहने से आपकी हर चलन में अलौकिकता दिखाई देगी। फिर लौकिक वा अलौकिक परिवार वाले महसूस करेंगे कि यह अनोखे लगते हैं, बदले हुए दिखाई देते हैं। जब खुद बदले हुए होंगे तब दुनिया को बदल सकेंगे।

41- जैसे बापदादा आप बच्चों के मस्तक की मणि की चमक देखते हैं ऐसे आप सभी की मस्तक-मणी को ही देखते रहो तो दृष्टि और वृत्ति शुद्ध सतोप्रधान बन जायेगी। दृष्टि जो चंचल होती है, उसका मूल कारण है कि मस्तिष्क को न देख शारीरिक रूप को देखते हो। रूप को देखना माना साँप को देखना। जैसे साँप के मस्तिष्क में मणि होती है। ऐसे शरीर में आत्मा रूपी मणि विराजमान है। मणि को देखना है न कि साँप को। अगर साँप को देखा तो साँप काटेगा। आप साँप को देखते हुए भी साँप को न देखो, मणि को देखो तो साँप का जो विष है वह हल्का हो जायेगा। अगर शरीर रूपी साँप को देखा तो उन समान बन जायेंगे लेकिन मणि को देखेंगे तो बापदादा की माला की मणि बन जायेंगे। और मणि बनकर सारी सृष्टि के बीच चमकेंगे।

42- सभी पाण्डव ज्ञानी तू आत्मा तो हो अब ज्ञानी तू आत्मा के साथ-साथ

स्नेही भी बनना है। जो स्नेही होता है वह स्नेह पाता है। जिससे ज्यादा स्नेह होता है तो कहते हैं – सुध-बुध ही भूल जाती है। अर्थात् अपने स्वरूप की स्मृति भी भूल हाती है। बुद्धि की लगन उसके सिवाए कहाँ नहीं रहती। ऐसे जो रहने वाले होते उनको कहा जाता है स्नेही। स्नेही बनो तो सहजयोगी बन जायेंगे।

43- कुमारों को यह बात पक्की करनी है कि बापदादा जो कहेंगे, जो करायेंगे, जैसे चलायेंगे, वैसे ही करेंगे, चलेंगे, बोलेंगे, देखेंगे। जो बाप कहे वही सोचना है और कुछ सोचना नहीं है। इन ऑखों से और कुछ देखना नहीं है क्योंकि यह ऑखें भी बाप को दे दी ना। परवानों को शमा के बिना और कुछ देखने में आता ही नहीं। जब और कुछ देखते हो तब धोखा खाते हो। तो अपने आपको धोखा न दो, इसके लिए सम्पूर्ण सच्चे परवाने बनो।

44- कुमारों को विशेष हर परिस्थिति का सामना करने के लिए अपने मन को शक्तिशाली बनाना चाहिए। मन शक्तिशाली तब बनेगा जब मन को ड्रिल करायेंगे। एक सेकेण्ड में आवाज में आये और एक सेकेण्ड में आवाज से परे हो जायें, एक सेकेण्ड में सर्विस के संकल्प में कार्य के प्रति शारीरिक भान में आओ और फिर एक सेकेण्ड में अशरीरी हो जाओ। जैसे शारीरीक ड्रिल सुबह करते हो ऐसे अव्यक्त ड्रिल भी अमृतवेले विशेष रूप से करो।

45- फाइनल पेपर अनेक प्रकार के भयानक और न चाहते हुए भी अपनी तरफ आकर्षित करने वाली परिस्थितियों के बीच होंगे। उनकी भेंट में आजकल की परिस्थितियाँ तो कुछ भी नहीं हैं। तो अन्तिम परिस्थितियों में पास होने के लिए पहले से तैयारी करो। जब अपने को देखो बहुत बिजी हूँ, बुद्धि स्थूल कार्य में बहुत बिजी है, चारों ओर सरकमस्टांस अपनी तरफ खींचने वाले हैं, उस समय एक सेकेण्ड में अशरीरी बनने का अभ्यास करो। इस अभ्यास से सफलता-मूर्त बन जायेंगे।

46- सभी कुमार, हर बात को सीखने और धारण करने तथा आगे के लिए भी अपने को उसमें चलाने के लिए चात्रक(चातक)हैं। चात्रक तो हो लेकिन साथ-

साथ चरित्रवान भी बनना है। चातक का कार्य होता है उसके प्यासी रहना। लेकिन पात्र तब बनेंगे जब चरित्रवान बनेंगे। विजयमाला के नजदीक आने का पात्र बनना है।

47- सभी को स्वराज्य अधिकारी होकर रहना है कभी भी राजा के बदले प्रजा (अधीन) नहीं बनना है। अगर ऐसा खेल करते रहेंगे तो सदा के राज्य भाग्य के अधिकार के संस्कार अविनाशी नहीं बन सकते। जो अपने आदि अनादि संस्कार अविनाशी नहीं बना सकते वह आदिकाल के राज्य अधिकारी भी नहीं बन सकते। अगर बहुतकाल तक योद्धेपन के संस्कार रहे अर्थात् युद्ध करते समय बिताया, आज जीत कल हार, अभी-अभी जीत, अभी हार, सदा के विजयीपन के संस्कार नहीं तो इसको क्षत्रिय कहा जायेगा। ब्राह्मण सो देवता बनते हैं, क्षत्रिय तो क्षत्रिय घराने में ही जायेंगे।

48- सभी कुमार पुरूषार्थी शब्द को यथार्थ रीति से यूज करते हो? इस पुरूषार्थी शब्द में सारा ज्ञान समाया हुआ है। पुरूषार्थी अर्थात् रथ का रथी अर्थात् मालिक। रथी रथ को चलाने वाला होता है न कि रथ के अधीन हो चलने वाला। अधिकारी सर्वशक्तिमान् बाप की सर्वशक्तियों के अधिकारी हैं। पुरूषार्थी शब्द को कभी अलबेले रूप में यूज नहीं करो। पुरूषार्थी हैं, चल रहे हैं, कर रहे हैं, करना तो है.....यह भी अलबेलेपन की भाषा है। अब इस भाषा का भी परिवर्तन करो। पुरूष को प्रकृति धोखा दे नहीं सकती। सभी कमज़ोरियाँ अलबेलेपन की निशानी हैं। महावीर तो पहाड़ को भी हथेली पर ले उड़ने वाला है। हल्का बनाने वाला है। छोटी-छोटी परिस्थितियों से घबराने वाला नहीं।

49- सभी कुमारों ने मास्टर मुरलीधर बनकर विकारों रूपी साँप के विष को समाप्त कर शैया बनाई है ना! ऐसे परिवर्तन करने वाले अर्थात् साँपों को शैया बनाने वाले विजयी कुमार हो या युद्ध करने वाले कमानधारी क्षत्रिय हो? जब तक स्वयं के संस्कारों को परिवर्तन नहीं किया है तब तक विश्व परिवर्तक कैसे बनेंगे?

50- सभी कुमार स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करने वाले या अभी दृष्टि परिवर्तन, वृत्ति परिवतर्नन करने के ही पुरूषार्थ में लगे हुए हो? आप दृष्टि द्वारा देखने वाले दृष्टा हो। दिव्य नेत्र से देखो, इस चमड़ी के नेत्र से देखते ही क्यों हो? दिव्य नेत्र से स्वत: दिव्य स्वरूप दिखाई देगा। चमड़े की ऑखें तो चमड़ी को देखती। चमड़ी को देखना, चमड़ी का सोचना, यह ब्राह्मण वा फरिश्तों का काम नहीं।

51- दृष्टि, वृत्ति को शुद्धि बनाने के लिए सदैव हरेक नारी शरीरधारी आत्मा को शक्ति-रूप, जगत माता का रूप, देवी का रूप देखना यह है कि दिव्य नेत्र से देखना। कुमारी है, माता है, बहन है, सेवाधारी निमित्त शिक्षक है लेकिन है तो शक्ति। बहन भाई के सम्बन्ध में भी कभी-कभी वृत्ति और दृष्टि चंचल हो जाती है इसलिए सदा शक्ति रूप देखो। शक्ति के आगे कोई अशुद्ध वृत्ति से आ नहीं सकता।

52- महावीर की विशेषता है एक राम दूसरा न कोई। हर भाई महावीर है, हर बहन शक्ति है। महावीर भी राम का है तो शक्ति भी शिव की है। तो किसी भी शरीरधारी को देखते मस्तक के बीच आत्मा को देखो। आत्मा, आत्मा को देखते स्वत: ही आत्म-अभिमानी बन जायेंगे।

53- सदा एक बात की सावधानी रखो जो भी करना है श्रेष्ठ करना है वा श्रेष्ठ बनना है। हर बात में दृढ़ संकल्प वाले बनो। कुछ भी सहन करना पड़े, सामना करना पड़े लेकिन श्रेष्ठ कर्म वा श्रेष्ठ परिवर्तन करना ही है। अटेन्शन, चेकिंग, याद और सेवा यह डबल लाक सदा लगा रहे। जैसे दृष्टि और वृत्ति दो दरवाजे हैं, ऐसे यह डबल लाक दोनों को लगाओ।

54- कुमार जीवन में जब ब्राह्मण बने हो तो ब्राह्मण जीवन का मुख्य आधार, नवीनता, अलौकिकता वा जीवन का श्रंगार है ही पवित्रता। ब्राह्मण जीवन की चैलेन्ज है काम-जीत। यही असम्भव से सम्भव कर दिखाने की वा श्रेष्ठ ज्ञान दाता को प्रत्यक्ष करने की निशानी है। जैसे नामधारी ब्राह्मणों की

निशानी चोटी और जनेऊ है, ऐसे सच्चे ब्राह्मणों की निशानी पवित्रता और मर्यादायें हैं। पवित्रता की पहला आधार मूर्त प्वाइंट है स्मृति की पवित्रता। मैं सिर्फ आत्मा नहीं लेकिन मैं शुद्ध पवित्र आत्मा हूँ, श्रेष्ठ वा पूज्य आत्मा हूँ। विशेष आत्मा हूँ। फिर वृत्ति वा दृष्टि की पवित्रता के लिए लौकिक वा अलौकिक परिवार में सभी के प्रति परमपूज्य आत्मायें है वा पूज्य बनाना है – यही दृष्टि में रहे। किसी भी पूज्य आत्मा प्रति अपवित्रता की दृष्टि वा दैहिक दृष्टि रखना महापाप है।

55- आप बाप द्वारा निमित्त बने हुए सहयोगी वा सेवाधारी आत्माएं हो आपका मुख्य लक्षण त्याग और तपस्या है। इसी लक्षण के आधार पर सबको त्यागी और तपस्वी की दृष्टि से देखो न कि दैहिक दृष्टि से। श्रेष्ठ परिवार है तो सदा श्रेष्ठ दृष्टि रखो। सदा याद रखो कि पूज्य आत्मा के बदले पाप आत्मा तो नहीं बन गये।

56- कुमारों की विशेषता और महानता तब गाई जायेगी जब आदि से अब तक निर्विघ्न हों। जो निर्विघ्न कुमार हैं वही महान हैं। दुनिया वाले कुमारों के लिए समझते हैं कि कुमार योग्य वा योगी बन जाएं–यह बहुत मुश्किल है। लेकिन कुमार विश्व को चैलेंज करें कि आप जिसे असम्भव कहते हो उसे हम सम्भव करके दिखायेंगे। ऐसे सैम्पल बनने वाले कुमारों को बापदादा सदा ही दिल से मुबारक देते हैं।

57- कुमार अर्थात् न समस्या बनना है और न समस्या में हार खानी है। कुमारों के आगे एक ही विघ्न आता है कि कोई साथी नहीं है। कोई साथी चाहिए, कम्पैनियन चाहिए। इसलिए किसी न किसी रीति से अपनी कम्पनी बना लेते हैं, उनसे बात-चीत करना, उनके साथ ही बैठना, उठना... कोई-कोई तो फिर कम्पैनियन भी बना लेते हैं। लेकिन आप सदा बाप की कम्पनी में रहने वाले कुमार बनो। एक दो की कंपनी नहीं लेकिन सारा परिवार ही कंपनी है। एक बाप की कम्पनी में रहने वाले कुमार सदा सुखी रहते हैं।

58- कुमारों को यदि कम्पनी चाहिए तो आपस में पाण्डव भवन बनाकर सफल रहें–तो भी अच्छा है। लेकिन ऐसा न हो कि आज पाण्डव भवन बनाओ और कल एक पाण्डव इस्ट में चला जाए, एक वेस्ट में.....ऐसा पाण्डव भवन नहीं बनाना। बापदादा को कुमारों के ऊपर विशेष नाज़ है कि अकेले रहते भी पुरूषार्थ में तीव्रगति से चलते हैं। कुमार आपस में दो-तीन साथी बनकर रहें। साथी सिर्फ फीमेल ही नहीं चाहिए, दो कुमार भी साथ में रह सकते हो लेकिन एक दो के प्रति निर्विघ्न साथी होकर रहो, ऐसा जलवा दिखाओ। योग्य और निर्विघ्न कुमार बनो, सेवा के क्षेत्र पर समस्या रूप नहीं बनो, समस्या को मिटाने वाले बनो।

59- कुमार सभी ब्रह्माकुमार हो ना कि फलाने भाई कुमार, फलानी बहन कुमार हो। फालो फादर गाया हुआ है फालो ब्रदर्स-सिस्टर नहीं। हर एक की विशेषता देखो, लेकिन फालो फादर। रिगार्ड रखो लेकिन गाइड एक बाप है। कोई भाई-बहन गाइड नहीं बन सकता। गाइड एक है। गॉड गाइड है और साकार एग्ज़ाम्पल ब्रह्मा बाप है। कोई भी निमित्त हैं लेकिन निमित्त किसने बनाया? बाप ने!

60- मन्सा संकल्प का, बोल का वा सम्पर्क का विशेष झुकाव होना यह लगाव की निशानी है। बात करने का झुकाव होना भी लगाव की परसेन्टेज है। इसके लिए जब कोई इशारा मिले तो उस इशारे को इशारे से खत्म कर दो। जिद वा सिद्ध नहीं करो। अगर सिद्ध करते हो तो यह भी जैसे पाप की लकीर और लम्बी करते जाते हो। इसलिए जब हो ही विश्व-परिवर्तन के कार्य में तो स्व परिवर्तन कर लो। ये समझदारी का काम है। अगर कुछ नहीं है तो नहीं कर दो अर्थात् उस बात का नाम निशान खत्म कर दो। बहस में नहीं आओ। संकल्प, बोल और सम्पर्क में परिवर्तन लाओ।

61- कुमारों की मुख्य कम्पलेंट यही रहती है कि क्या करें दृष्टि, वृत्ति चंचल हो जाती है। लेकिन कोई भी चीज़ चंचलता में तब आती है जब हिलने की मार्जिन होती है। अगर वह फुल (सम्पन्न) हो तो हिल नहीं सकती। तो सदा

स्मृति सम्पन्न बनो। इसके लिए छोटा-सा स्लोगन याद रखो – न बुरा सोचना है, न बुरा सुनना है, न बुरा देखना है ..... देह को देखना, देहधारी के प्रति सोचना वा संकल्प करना, देहधारी समझ बात करना यह बुरा है। इस बुराई से किनारा करो तो दृष्टि, वृत्ति की चंचलता समाप्त हो जायेगी।

62- कुमार जीवन में सदा महानता का अनुभव करने के लिए 3 बातें याद रखो:-

1-मेहमान
2-महान अन्तर
3-महिमा।

* जब स्वयं को मेहमान समझेंगे तो कोई भी रूप वा रंगत की तरफ अट्रैक्शन वा अटेन्शन नहीं जायेगा।

* हर संकल्प वा कर्म करते जब महान अन्तर सामने रहेगा तो देह अंहकार वा क्रोध का अंश, वंश समाप्त हो जायेगा।

* बाप की वा हर आत्मा के गुणों की महिमा करने से किसी भी बात की फीलिंग नहीं आयेगी। इन्हीं तीन बातों से सदा समर्थवान बन जायेंगे और दृष्टि, वृत्ति, वायुमण्डल को सहज ही परिवर्तन कर लेंगे।

63- कुमार जीवन में हर संकल्प करते हुए, हर कदम उठाते हुए स्वयं को बाप के फरमान की लकीर के अन्दर समझो। जब संकल्प से भी फरमान की लकीर से बाहर निकलते हो तब व्यर्थ बातें वार करती हैं। लकीर के अन्दर रहो तो सेफ रहेंगे। कोई भी प्रकार के रावण के संस्कार वार नहीं करेंगे। और जब वार ही नहीं होगा तो उसे मिटाने में जो समय जाता है, वह बच जायेगा।

64- कुमार जीवन में धरनी नर्म भी है तो फलीभूत भी है। इस धरनी पर कभी भी विकर्मो के कांटे नहीं बोना। जो कांटे संस्कार रूप में अन्दर नुकसान पहुँचाते रहते हैं उन्हें बाप के आगे स्वाहा कर दो। स्वाहा करना अर्थात्

नामनिशान भी समाप्त कर देना फिर उसे स्मृति में भी नहीं लाना। सदा ऐसे समझना कि यह मुझ सतोगुणी आत्मा के संस्कार नहीं हैं।

65- कुमार जीवन में सदा तीव्र पुरूषार्थी बनने के लिए सारे दिन में भिन्न-भिन्न सम्बन्धों का रस एक बाप से लो। आत्माओं से तो सारा कल्प सर्व सम्बन्धों का अनुभव करेंगे लेकिन बाप से सर्व सम्बन्धों का अनुभव अभी नहीं किया तो कभी नहीं करेंगे। निरन्तर एक से सर्व सम्बन्धों के सुख का अनुभव करने से बाकी सब सुख असार और नीरस दिखाई देंगे। बुद्धि एक ठिकाने पर स्थित हो जायेगी।

66- सिर्फ अपने को कुमार नहीं लेकिन राजऋषि कुमार समझकर चलो तो स्वराज्य अधिकारी और बेहद के वैरागी रहेंगे। ऐसे राजऋषि कुमार ही बाप को और सारे विश्व को प्यारे हैं।

67- कुमारों को माया भी बहुत प्यार करती है। माया भी समझती है मेरा बनें, इसलिये डबल अटेन्शन दो। माया के कभी नहीं बनना। देखा जाता है कि कुमार कुमारियों से माया का कुछ एक्स्ट्रा प्यार है। लेकिन ये प्यार नहीं है, धोखा है। पहले माया बहुत प्यार करती है लेकिन समाया हुआ धोखा होता है। अभी तक कुमार-कुमारियाँ माया के वशीभूत होकर कई उल्टे खेल करते हैं, इसलिए रिपोर्ट आती है। लेकिन अब विश्व परिवर्तक बन, सभी एक-दो के सहयोगी बन मायाजीत बनो।

68- कुमार पवित्र देव हैं। किसी भी तरफ, अपवित्र दृष्टि की बात तो छोड़ो लेकिन स्वप्न मात्र भी अपवित्र वृत्ति नहीं जा सकती। मैं फलाना हूँ, नहीं। देव आत्मा हूँ, पवित्र आत्मा हूँ–यह स्मृति ही पूज्य बना देगी।

सेवा के लिए कुमारों के प्रति बापदादा के विशेष डायरेक्शन

1- कुमारों को अपने जीवन परिवर्तन द्वारा आत्माओं की सेवा करनी है। अपने जीवन द्वारा आत्माओं को जीयदान देना है। स्व-परिवर्तन द्वारा औरों का परिवर्तन करना है। अनुभव कराओ कि ब्रह्माकुमार अर्थात् वृत्ति, दृष्टि, कृति और वाणी परिवर्तन। साथ-साथ प्युरिटी की पर्सनैलिटी की ओर आकर्षित हों। सदा बाप का परिचय देने वाले वा बाप का साक्षात्कार कराने वाले रूहानी दर्पण बन जाओ। जिस चित्र और चरित्र से सर्व को बाप ही दिखाई दे। वैसे भी जब कोई वन्डरफुल वस्तु देखते हैं या वन्डरफुल परिवर्तन देखते हैं तो सबके मन से, मुख से यही आवाज़ निकलता है कि ऐसी जीवन किसने बनाई वा यह परिवर्तन कैसे हुआ! इतना बड़ा परिवर्तन – जो कौड़ी हीरा बन जाए – तो सबके मन में, बनाने वाला स्वत: ही याद आयेगा।

2- कुमार ग्रुप भाग-दौड़ बहुत करता है। लेकिन सेवा के क्षेत्र में भाग दौड़ करते बैलेन्स रहे। स्व सेवा और सर्व की सेवा दोनों का बैलेन्स हो, नहीं तो सेवा की भाग-दौड़ में माया भी बुद्धि की दौड़ करा देती है। बैलेन्स से कमाल होता है। बैलेन्स रखने वाले का परिणाम सेवा में भी कमाल होगी। नहीं तो बाह्यमुखता के कारण कमाल के बजाए अपने वा दूसरों के भाव-स्वभाव की धमाल में आ जाते हो। तो सर्व की सेवा के साथ-साथ पहले स्व सेवा आवश्यक है। यह बैलेन्स उन्नति को प्राप्त कराता रहेगा।

3- कुमार जीवन के परिवर्तन का प्रभाव जितना दुनिया पर पड़ेगा उतना बड़ों का नहीं। कुमार ग्रुप गवर्मेन्ट को भी अपने परिवर्तन द्वारा प्रभू परिचय दे सकते हैं। गवर्मेन्ट को भी जगा सकते हैं। लेकिन वह परीक्षा लेंगे। ऐसे नहीं मानेंगे। गुप्त सी.आई.डी. आपके पेपर लेंगे कि कहाँ तक विकारों पर विजयी बने हैं। जान बूझकर क्रोध दिलायेंगे, ऐसा प्रैक्टिकल पेपर देने के लिए तैयार

हो ना। जब इस पेपर में पास होंगे तो स्वत: उनका ध्यान, बनाने वाले बाप की ओर जायेगा।

4- यह लक्ष्य रखो कि ऐसा रूहानी आत्मिक यूथ ग्रुप बनायें जो विश्व को चैलेन्ज करे कि हम रूहानी शक्तिशाली यूथ ग्रुप विश्व शान्ति की स्थापना के कार्य में सदा सहयोगी हैं और इसी सहयोग द्वारा विश्व परिवर्तन करके दिखायेंगे। ऐसे नहीं आज चैलेन्ज करो कल स्वयं ही चेन्ज हो जाओ।

5- रूहानी यूथ ग्रुप शान्तिकारी, कल्याणकारी ग्रुप है। सदा विश्व में शान्ति स्थापना के कार्य में निमित्त है। वह अशान्ति और आप शान्ति फैलाने वाले हो। यूथ में राजनीतिक लोगों को भी उम्मीदें हैं और बापदादा को भी उम्मीदें हैं। सदा सफलता के सितारे बन गवर्मेन्ट तक यह आवाज बुलन्द करना कि हम विजयी रत्न हैं। कभी भी अपनी शक्तियों को मिसयूज़ नहीं करना। सदा याद रखो कि हमारे ऊपर बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। जो कर्म आप करेंगे आपको देख सब करेंगे। इसलिए साधारण कर्म न हो। सदा श्रेष्ठ कर्म करने वाले सदा अचल रहने वाले बनो।

6- कुमारों को तो दो रोटी खाना है और बाप की सेवा में लगना है, यही काम है। दो रोटी के लिए निमित्त मात्र कोई कार्य करते हो, लगाव वश तो नहीं करते? कुमार कहने से नहीं करते, स्वतन्त्र हैं।

7- कुमार अब ऐसा जीवन का नक्शा तैयार करके दिखाओ जो सब कहें – निर्विघ्न आत्माएं हैं तो यहाँ हैं। सब विघ्न-विनाशक बनो। हलचल में आने वाले नहीं, वायुमण्डल को परिवर्तन करने वाले, शक्तिशाली वायुमण्डल बनाने वाले बनो। सदा विजय का झण्डा लहराता रहे। ऐसा विशेष नक्शा तैयार करो। जहाँ युनिटी है वहाँ सहज सफलता है। लेकिन गिराने में युनिटी नहीं करना, चढ़ने में, सदा उड़ती कला में जाना है और सबको ले जाना है, यही लक्ष्य रहे।

8- कुमार जीवन श्रेष्ठ जीवन है, महान आत्मायें हैं, अभी कुमारों को सबसे बड़े से बड़ी कमाल करनी है – बाप के समान बन बाप के साथी बनाना है।

जैसे आप स्वयं बाप के साथी बने हो ऐसे औरों को भी साथी बनाना है। माया के साथियों को भी बाप का साथी बनाना है, ऐसे सेवाधारी बनो। अपने वरदानी स्वरूप से शुभ भावना और शुभ कामना से बाप का बनाना है। इसी विधि से सिद्धि को प्राप्त करना है। जहाँ श्रेष्ठ विधि है वहाँ सिद्धि जरूर है।

9- सभी कुमार स्वयं को सेवा के निमित्त अर्थात् विश्व-कल्याणकारी समझ आगे बढ़ने वाले हो ना। विश्व कल्याणकारी बेहद में रहते हैं, हद में नहीं आते। हद में आना अर्थात् सच्चे सेवाधारी नहीं। बेहद में रहना अर्थात् जैसा बाप वैसे बच्चे। बाप को फालो करने वाले श्रेष्ठ कुमार हैं, इसी स्मृति में रहो। जैसे बाप सम्पन्न है, बेहद का है ऐसे बाप समान सम्पन्न सर्व खजानों से भरपूर आत्मा हूँ, इस स्मृति से व्यर्थ समाप्त हो जायेगा, समर्थ बन जायेंगे।

10- कुमार अर्थात् सर्व शक्तियों को, सर्व खज़ानों को जमा कर औरों को भी शक्तिवान बनाने की सेवा करने वाले। सदा इसी सेवा में बिज़ी रहो। बिज़ी रहेंगे तो उन्नति होती रहेगी। अगर थोड़ा भी फ्री होंगे तो व्यर्थ चलेगा। समर्थ रहने के लिए बिजी रहो। अपना टाइम टेबल बनाओ, बुद्धि से बिजी रहने का प्लैन बनाओ, तो बिजी रहने से सदा उन्नति को पाते रहेंगे।

11- कुमारों को कमाल करने के लिए शक्तिशाली बनना और बनाना है। शक्तिशाली बनने के लिए सदा अपना मास्टर सर्वशक्तिमान् का टाइटिल स्मृति में रखो। जहाँ शक्ति होगी वहाँ माया से मुक्ति होगी, जितना स्व के ऊपर अटेन्शन होगा उतना ही सेवा में भी अटेन्शन जायेगा। अगर स्व के प्रति अटेन्शन नहीं तो सेवा में शक्ति नहीं भरती। इसलिए सदा अपने को सफलता स्वरूप बनाने के लिए शक्तिशाली अभ्यास के साधन बनाने चाहिए। पहले स्व उन्नति का प्रोग्राम बनाओ तब सहज सफलता होगी।

12- कुमारों के प्रति बापदादा का डायरेक्शन है – लौकिक में रहते अलौकिक सेवा करनी है। लौकिक सेवा सम्पर्क बनाने का साधन है। इसमें बिजी रहो तो अलौकिक सेवा कर सकेंगे। लौकिक में रहते अलौकिक सेवा करो तो

बुद्धि भारी नहीं होगी। सबको अपना अनुभव सुनाकर सेवा करो। लौकिक सेवा, सेवा का साधन समझकर करो तो लौकिक साधन बहुत सेवा का चांस दिलायेगा। लक्ष्य ईश्वरीय सेवा का है लेकिन साधन लौकिक सेवा है – ऐसा समझकर करो। कुमारों को अपने हर कर्म से सेवा करनी है। दृष्टि से, मुख से सेवा ही सेवा। जिससे प्यार होता है उसे प्रत्यक्ष करने का उमंग होता है। हर कदम में बाप और सेवा सदा साथ रहे। याद और सेवा के बैलेन्स से किसी भी परिस्थिति में नीचे ऊपर नहीं होंगे।

13- बापदादा को कुमारों से सदा उम्मीद है कि कुमार विश्व को बदल सकते हैं। अगर सभी कुमार एक दृढ़ संकल्प वाले बन आगे बढ़ते चलें तो बहुत कमाल कर सकते हैं। कुमार हैं बापदादा के कर्तव्य के सितारे। सेवा के निमित्त तो कुमार ही बनते हैं। जो भी सेवाएं होती हैं उसमें कुमारों का विशेष पार्ट होता है। तो विशेष पार्ट लेने वाली विशेष आत्मायें हैं यह नशा रखो, इसी खुशी में रहो। सेवा के उमंग उत्साह वाले हैं, निश्चयबुद्धि हैं, अचल हैं, हिलने वाले नहीं हैं – ऐसी अचल आत्मायें औरों को भी अचल बनाकर दिखाओ।

14- कुमार अर्थात् महादानी बन दान करने वाले। जब स्वयं का भण्डारा भरपूर है तो बहुतों को दान देना चाहिए। सेवा को सदा आगे बढ़ाते चलो। ऐसे नहीं आज चांस मिला तो कर लिया या जब चांस मिलेगा तब कर लेंगे, नहीं। जिसके पास खजाना होता है वह कहीं से भी गरीबों को ढूँढकर भी, ढिंढोरा पिटवाकर भी दान ज़रूर करता है। क्योंकि उसको मालूम है दान करने का पुण्य मिलता है। वह दान तो विनाशी है और स्वार्थ का भी हो सकता है। आप सब तो अविनाशी खजानों के महादानी हो। तो सेवा को बढ़ाओ। रेस करो, महादानी बनो। निश्चय से करो, ऐसे नहीं सोचो धरनी ऐसी है। अब समय बदल गया, समय के साथ धरनी भी बदल रही है, सब आवश्यकता अनुभव कर रहे हैं। अभी समय है, समय के प्रमाण सदा के महादानी बनो।

15- रोज अपनी रिजल्ट निकालो कि मन्सा, वाचा और कर्मणा क्या सेवा की और कितनों की सेवा की? वाचा नहीं तो मन्सा करो, मन्सा नहीं तो कर्मणा

करो। कर्म द्वारा किसी आत्मा को परिवर्तन करना – यह है कर्मणा। सम्पर्क द्वारा किसी आत्मा को परिवर्तन कर सकते हो – ऐसे सेवाधारी बनो। अब कोई नवीनता करो। सेन्टर खोला, गीता पाठशाला खोली, मेला किया....यह तो पुरानी बातें हो गई, नया कुछ निकालो। लक्ष्य रखो, अपने में और सेवा में कोई न कोई नवीनता ज़रूर लानी है। नहीं तो कभी थक जायेंगे, कभी बोर हो जायेंगे। नवीनता होगी तो सदा उमंग उत्साह में रहेंगे।

16- कुमार अर्थात् अपने हर कर्म द्वारा अनेकों की श्रेष्ठ कर्मो की रेखा खींचने वाले। स्वयं के कर्म औरों के कर्म की रेखा बनाने के निमित्त बन जाएं – ऐसे सेवाधारी बनो। हर कर्म में यह चेक करो कि हर कर्म ऐसा स्पष्ट है जो औरों को भी कर्म की रेखा स्पष्ट दिखाई दे। ऐसे श्रेष्ठ कर्मो के श्रेष्ठ खाते को सदा जमा करने वाली विशेष आत्माओं को ही कहा जाता है सच्चे सेवाधारी। याद और सेवा – यही सदा आगे बढ़ने बढ़ाने का साधन है। याद शक्तिशाली बनाती है और सेवा खज़ानों से सम्पन्न बनाती है।

17- कुमार डबल स्वतन्त्र हैं, एक लौकिक ज़िम्मेवारी से भी स्वतन्त्र और दूसरा सर्व बन्धनों से भी स्वतन्त्र। तो डबल स्वतन्त्र आत्मायें डबल सेवा कर सकती हैं। क्योंकि कुमारों को स्वतन्त्र होने के कारण समय बहुत है। तो कुमार अर्थात् समय के खजाने से सम्पन्न और समय होने के कारण औरों की सेवा में भी सम्पन्न बन सकते हैं। सेवा की सबजेक्ट में 100% मार्क्स ले सकते हैं।

18- कुमारों को अब बाप समान रहमदिल बनना है। अशान्त आत्माओं को शान्ति देना, भटकती हुई आत्माओं को ठिकाना देना – यह बड़े ते बड़ा पुण्य करते रहो। जैसे प्यासी आत्माओं को पानी पिलाना पुण्य है वैसे यह सेवा करना अर्थात् पुण्य आत्मा बनना। किसी भी अशान्त आत्मा को देख तरस आना चाहिए। उसे शान्ति का दान दो।

19- कुमारों को सदा यह स्मृति रहे कि हम ब्रह्माकुमार रूहानी सेवाधारी हैं। सेवाधारी अर्थात् स्वयं सम्पन्न होकर औरों को देने वाले। सेवाधारी समझकर

सेवा करेंगे तो सफलता-मूर्त होंगे। सेवाधारी की विशेषता है कि सदा नम्रचित। निमित्त और नम्रचित यह दोनों विशेषतायें सेवा में सदा सफलता स्वरूप बनाती हैं। कुमार सेवा के क्षेत्र में आगे बढ़ने वाले होते हैं लेकिन आगे बढ़ते हुए निमित्त और नम्रचित की विशेषता नहीं होगी तो सेवा करेंगे, मेहनत करेंगे, सफलता नहीं दिखाई देगी।

20- कुमार अर्थात् प्लैनिंग बुद्धि। जैसे सेवा की भाग दौड़ में होशियार हो ऐसे सर्व विशेषताओं सहित विशेष सेवाधारी बनो। नहीं तो टैम्प्रेरी टाइम की सफलता होगी लेकिन चलते-चलते थोड़े टाइम के बाद कन्फ्यूज हो जायेंगे। यह क्या हुआ, यह क्यों हुआ, यह दीवार आ जायेगी। कुमारों को सेवा तो करनी है लेकिन मर्यादाओं में रहने से सर्विस में फास्ट और फर्स्ट हो जायेंगे।

21- कुमारों में बाप को प्रत्यक्ष करने का उमंग तो रहता ही है, आजकल तो यूथ के तरफ सबकी नजर भी है। इसलिए आप रूहानी यूथ अपनी मन्सा शक्ति से, बोल से, चलन से ऐसी शान्ति की शक्ति का अनुभव कराओ जो वह समझें कि यह शान्ति की शक्ति से क्रान्ति लाने वाले हैं। जैसे जिस्मानी यूथ की चलन और चेहरे से जोश दिखाई देता है, देखकर ही पता चलता है कि यह यूथ है। चेहरे से ही वायब्रेशन आता है कि यह हिंसक वृत्ति वाले हैं, ऐसे आपके चेहरे से शान्ति की किरणों का अनुभव हो। वायब्रेशन आये–कि यह अहिंसक वृत्ति वाले शान्ति के अवतार यूथ हैं। ऐसी कमाल करके दिखाओ। कोई भी क्रान्ति का कार्य करता है तो सबका अटेन्शन जाता है। ऐसे आप लोगों के ऊपर सबका अटेन्शन जाए, ऐसी विशाल सेवा करो। क्योंकि ज्ञान सुनने से अच्छा तो लगता है लेकिन परिवर्तन देख कर अनुभवी बनते हैं तो ऐसी कोई न्यारी बात करके दिखाओ। वाणी से तो मातायें भी सेवा करती हैं, निमित्त बहनें भी सेवा करती हैं लेकिन आप यह नवीनता करके दिखाओ। जो गवर्मेन्ट का भी अटेन्शन जाए।

22- कुमारों को अपने हमजिन्स पर रहम आना चाहिए। जैसे स्वयं बचे हो ऐसे अपने हमजिन्स को बचाओ। जो शक्तियाँ मिली हैं वह औरों को भी दो।

सबको शक्तिशाली बनाओ। निमित्त समझकर सेवा करो। मैं सेवाधारी हूँ। नहीं। बाबा कराता है, मैं निमित्त हूँ। मैं-पन वाले नहीं। जिसमें मैं-पन नहीं है वही सच्चे सेवाधारी हैं।

23- जैसे वह जादूगर हाथ की सफाई दिखाते हैं। हाथ की सफाई से झट कोई भी चीज बदल देते हैं, ऐसे ही आप भी बुद्धि की सफाई से जादू के समान किसी को भी बदल सकते हो। जादू चलाने के लिए जितना समय उसे मन्त्र याद रहता है उतना समय उसका जादू सफल होता है। आप भी अगर महामन्त्र याद रखेंगे तो जादू के समान कार्य होगा। तो अब ऐसे रूहानी जादूगर बन चारों ओर फैल जाओ जिससे आवाज फैल जाए कि यह कौन, कहाँ से प्रगट हुए हैं। ऐसे महसूस करें कि एक-एक स्थान पर कोई अलौकिक आत्मा अवतरित हुई है। इससे स्वत: सेवा हो जायेगी।

24- सभी कुमार मास्टर ज्ञान सूर्य बन चारों ओर के अज्ञान अंधकार को मिटाने की सेवा करने में सदा बिजी रहो। सेवा में बिजी रहने से अपनी उलझनें स्वत: समाप्त हो जायेंगी। जैसे सूर्य का काम है रोशनी देना ऐसे आपका पहला काम है – हरेक को ज्ञान की रोशनी देना। इसी परमार्थ के कार्य में बिजी रहने से व्यवहार स्वत: सिद्ध हो जायेगा।

25- कुमार अर्थात् हार्डवर्कर। यहाँ जितनी हार्ड सेवा करते हो उतना वहाँ आराम से सिंहासन पर बैठेंगे। सेवा करने में बहुत मजबूत रहे हो इसलिए आपके (पाण्डवों के) शरीर भी बहुत मजबूत दिखाये हैं। आप मजबूत दिल वाले वा मन वाले हो उन्होंने शरीर दिखा दिये हैं। आप सच्ची दिल से, स्नेह से यज्ञ सेवा में सहयोग देते हो तो बाप भी सहयोग के रिटर्न में पदमगुणा सहयोग देने के लिए बांधा हुआ है।

26- कुमार सदा ही विश्व में कोई न कोई परिवर्तन के लिये एवररेडी रहते हैं। कोई भी क्रान्ति के निमित्त कुमार बनते हैं। तो ये है शान्ति की क्रान्ति। तो सभी कुमार सदा यह याद रखो कि हमारा हर कर्म परिवर्तन करने के निमित्त है।

तो कुमार अर्थात् विश्व परिवर्तक। सेवाकेन्द्र सेवा में नम्बर आगे तभी जाता है जब कुमार सहयोगी बनते हैं। जहाँ कुमार नहीं हैं वहाँ सेवा के प्लैन भी कम बनते हैं। लेकिन कुमार निर्विघ्न सेवाधारी हों। खिट-खिट करने वाले नहीं। कुमार ही सेवा की शोभा हैं इसीलिये बापदादा को कुमार प्यारे लगते हैं।

27- सेवा का प्लैन बनाते समय प्लेन बुद्धि का भी अटेन्शन रखो। अभी सेवा के प्लैन तो बहुत अच्छे अच्छे बनाते हो लेकिन प्लेन बुद्धि बन प्लैन नहीं बनाते। प्लेन बुद्धि अर्थात् सेवा करते और कोई भी बात बुद्धि को टच नहीं करे। सिर्फ निमित्त और निर्मान भाव हो। हद का नाम, हद का मान नहीं लेकिन निर्मान रहो। यदि प्लेन बुद्धि के बजाए बुद्धि में और अयथार्थ भाव का किचड़ा मिक्स हो जाता है तो सेवा का प्लैन जो बनाते हैं उसमें भी रत्न जड़ित के साथ पत्थर भी जड़ जाते हैं।

28- कुमार जीवन में कई बार बुद्धि का अभिमान आने के कारण अपने आपको बहुत होशियार समझने लगते हो, जिससे निर्मानता समाप्त हो जाती है। अब होशियारी को छोड़कर निर्मान बनो। सब कुछ करते हुए भी मैं पन का अभिमान न आये। रोब का संस्कार इमर्ज न हो। मैं ही राइट हूँ, मैं ही कर सकता हूँ... या मैं जो बोलता हूँ वह बिल्कुल सत्य बोलता हूँ....यह भी अहम् भाव है, जो निर्मानता को खत्म कर देता है। सत्य को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं होती। क्योंकि सत्य ऐसा सूर्य है जो छिप ही नहीं सकता। सच्चा आदमी कभी अपने को ऐसा नहीं कहेगा कि मैं ही सच्चा हूँ। यदि सत्यता को सिद्ध भी करना है तो सभ्यता पूर्वक करो।

29- जैसे अपने विचार खुशी से देते हो, ऐसे दूसरों के विचार भी खुशी से लो। दूसरे की राय, दूसरे की बात को भी इतना ही रिगार्ड दो जितना अपनी बात को रिगार्ड देते हो। कभी किसी की राय को कट नहीं करना। टकराव में नहीं आना। यदि किसी भी कारण से अवस्था नीचे ऊपर होती है तो वह सेवा, सेवा नहीं होती। इसलिए दूसरे के विचारों को भी अपने विचारों के माफिक सोचना-समझना। इफेक्ट में कभी नहीं आना। क्योंकि इफेक्ट में आना यह भी देह

अभिमान का बहुत सूक्ष्म रूप है जो कुमार जीवन में जल्दी प्रगट होता है, इसलिए सेवा के क्षेत्र में इसे प्रवेश होने नहीं देना तब सफलता प्राप्त होगी।

30- सेवा करते समय जब एक दो के सम्पर्क में आते हो तो हर एक को मधुर बोल की, स्नेह के बोल की गिफ्ट देना। हद के मेरे पन की भावना को बेहद में समाना। आपको कोई स्नेह नहीं भी दे तो भी आप स्नेह देना और स्नेह लेना। निगेटिव को भी पॉजिटिव में परिवर्तन करना।

स्व की चेकिंग के लिए कुमारों प्रति कुछ प्रश्न

1. अपने को पवित्रता का जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त किया हुआ अधिकारी आत्मा समझते हो?

(अ) सदा पवित्रता की शक्ति से स्वयं को पावन बनाकर औरों को पावन बनने की प्रेरणा देने वाले हो?

(ब) पावन बनना नैचुरल अनुभव होता है या जैसे दुनिया वाले कहते यह अननैचुरल है, ऐसे अनुभव होता है?

(स) दृष्टा बन दृष्टि द्वारा मस्तक मणि को देखते या चमड़ी की ऑख से चमड़ी दिखाई देती है?

2. विश्व की विशाल स्टेज पर स्वयं को विशेष पार्टधारी वा हीरो पार्टधारी समझकर हर कर्म करते या साधारण रूप से आपस में बोलते-चलते हो?

3. स्व सेवा और सर्व की सेवा का बैलेन्स सदा रहता है? संकल्प और कर्म साथ-साथ समान है? सेवा में सफल बनने वाले हो या खिट-खिट होती है?

4. कभी स्वप्न में भी यह ख्याल तो नहीं आता कि थोड़ा कोई सहयोगी मिल जाए, बीमारी में ही मदद हो जायेगी या किसी कुमारी का कल्याण कर दें?

5. बाप को अपना कम्पैनियन बनाया है? कभी अपने को अकेला समझ उदास तो नहीं हो जाते हो?

6. लौकिक जीवन के संस्कार कभी इमर्ज तो नहीं होते हैं? ऐसा क्वेश्चन तो नहीं उठता कि क्या करें व्यर्थ संकल्प बहुत आते हैं? मन के व्यर्थ संकल्पों का बंधन बांधता तो नहीं है?

7. अपने शरीर की शक्ति को और बुद्धि की शक्ति को सफल कर रहे हो या व्यर्थ के खाते में जा रही है?

8. सदा स्थिति एकरस रहती है या दूसरे रसों का आकर्षण आकर्षित कर लेता है?

9. इस दुनिया की बातों से, सम्बन्धों से न्यारे और दैवी परिवार वा बापदादा के प्यारे हैं–ऐसा अनुभव होता है?

10. सारे दिन में एक बाप से भिन्न-भिन्न सम्बन्धों के सुखों का अनुभव होता है?